ख़्वाहिशें कुछ कुछ
यूँ भी अधूरी रही

पहले उम्र नही थी
अब उम्र नही रही

Shyam Oza

गुलज़ार

जरख्म कहाँ कहाँ से मिले है
छोड इन बातो को..
जिन्दगी
तू तो बता
सफर
और कितना बाकी है..
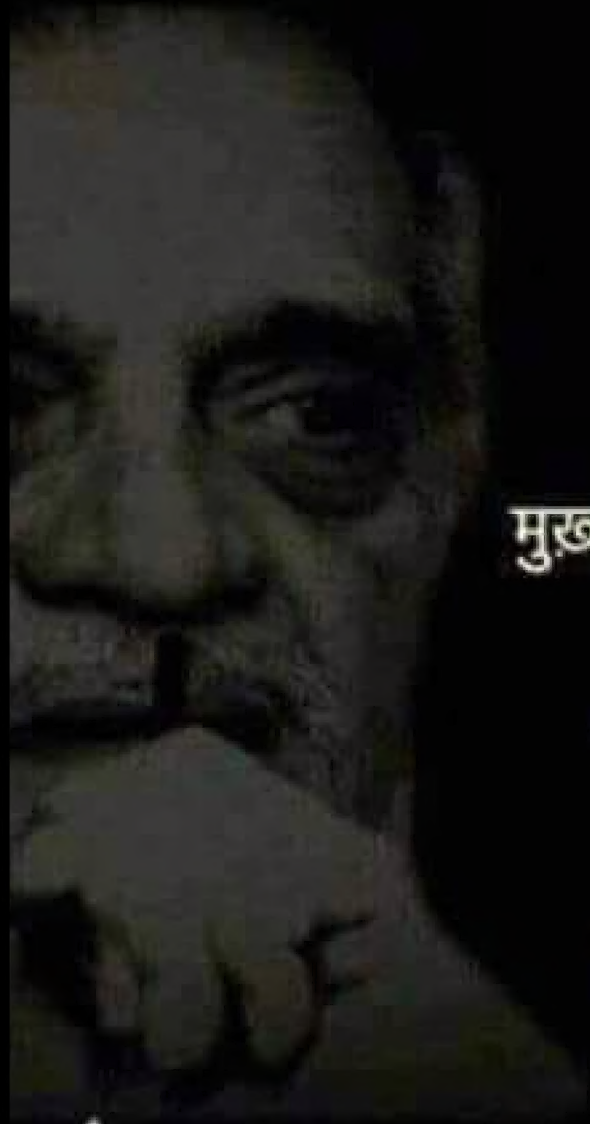
मुख़्तसर सा गुरूर भी ज़रूरी है
जीने के लिए
ज़्यादा झुक के मिलो
तो दुनिया पीठ को
पायदान बना लेती है
gulzar
एक अहसास ...

कुछ रिश्तो मे
मुनाफा
नही होता पर
जिन्दगी
को अमीर बना देते है
गुलजार

जब गिला शिकवा
अपनो से हो तो
खामोशी
ही भली
अब हर बात पे जंग हो
यह जरुरी तो नही

गुलजार

दर्द की अपनी भी
एक अदा है..
वो भी सहने वालों पर
फ़िदा है ..
the poetic genius
GULZAR

मिलता तो बहुत कुछ है
इस ज़िंदगी में..
बस हम गिनती उसी की
करते है
जो हासिल ना हो सका
gulzar
एक अहसास ...

अब न मांगेंगे
ज़िन्दगी या रब
ये गुनाह हमने
इक बार किया

~ गुलज़ार

इच्छाएँ

बडी बेवफा होती हैं..

कमबख्त,

पूरी होते ही

बदल जाती हैं..

थोड़ा सुकून भी ढूँढिये
जनाब,
ये जरूरतें तो कभी
खत्म नहीं होगी
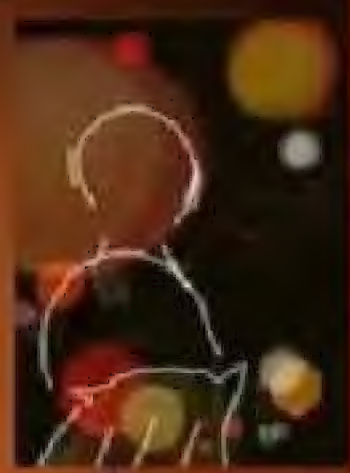
Gulzar
चौरस रातें
मैने सिर्फ तुम्हारे
कदम गिने थे
तुम्हारे क़दमो की
आहट सुनी थी
तुमने आना छोड़ दिया
लेकिन मैंने इंतजार
करना नहीं छोड़ा
JayaT

कौन कहता है कि
हम झूठ नही बोलते
एक बार खैरियत तो
पूछ के देखिए

gulzar
dil se

सहम सी गई है
ख्वाहिशे ...
शायद जरूरतो ने
ऊंची आवाज मे बात
की होगी
Made With
VivaVideo

यू तो ए ज़िन्दगी
तेरे सफर से शिकायते बहुत थी
मगर दर्द जब दर्ज कराने पहुँचे
तो कतारे बहुत थी

gulzar
dil se

सुना है ..
काफी पढ़ लिख गए हो
तुम..
कभी वो भी पढ़ो जो
हम
कह नहीं पाते..

---

the poetic genius

GULZAR

सो जाइये
सब तकलीफों को
सिरहाने रख कर...
क्योंकि
सुबह उठते ही इन्हें
फिर से गले लगाना है.
गुलज़ार

थोड़ी थोड़ी
गुफ़्तगू
दोस्तों से करते रहिये
जाले लग जाते है
अक्सर बंद
मकानो में...
गुलजार
एक अहसास